International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(4): 63-64

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(4): 63-64
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 01-05-2023
Accepted: 05-06-2023

डॉ. रवि शेखर आजाद
संस्कृत विभाग, सिदो-कान्हु मुर्मु विश्वविद्यालय, दुमका, झारखण्ड, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रवि शेखर आजाद
संस्कृत विभाग, सिदो-कान्हु मुर्मु विश्वविद्यालय, दुमका, झारखण्ड, भारत

पाणिनीय व्याकरण में वैदिक वाङ्मय

डॉ. रवि शेखर आजाद

प्रस्तावना

आचार्य पाणिनि व्याकरण नभोमण्डल के दैदीप्यमान भाष्कर हैं। जिनकी शुभ्र प्रखर किरणों से व्याकरण जगत आलोकित है। महर्षि पाणिनि ने भगवान शिव के आराधना करके उनके डमरू से प्राप्त चौदह प्रकार के माहेश्वर सूत्र द्वारा चौदह हजार सूत्रों का निर्माण किया जो लौकिक और वैदिक वाङ्मय दोनों में व्याप्त हुआ। पाणिनीय व्याकरण का विश्व की प्रायः सभी भाषाओं में अपनी प्रौढ़ता और विवेचन की वैज्ञानिकता के कारण निःसन्देह विशिष्ट स्थान है।

नृत्तावसाने नटराजराजो ननादढक्का नवपंचवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद्विमरों शिवसूत्रजालम्।।

प्रकृति प्रत्यय के उपदेश पूर्वक पढ़ने के स्वरूप उसके प्रयोग एवं अर्थ निर्णय में प्रयुक्त होने वाले शास्त्र को व्याकरण कहते हैं। इसे वेद पुरूष की मुख की संज्ञा प्राप्त है। ''व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेन इति व्याकरणम्''
यह इसका व्युत्पत्तिकृत अर्थ है। आचार्य पाणिनि ने अपने 'अष्टाध्यायी' में वेद मात्र ही में प्रयोग होने वाली कुछ विधियों का प्रयोग किया था। जिसे उनके परवर्ती कौमुदीकार श्री भट्टोजिदीक्षित जी ने इसे पृथक प्रकरण में उपनिबद्ध कर दिया उसे ही वैदिक प्रक्रिया या वैदिकी कहते हैं।
पाणिनीय व्याकरण के प्रकाश में आने के पूर्व वैदिक व्याकरण सम्बन्धी प्रतिशाख्य, शिक्षा, कल्प, निरुक्त आदि वैदांगो में प्रकृति–प्रत्यय आदि
निरूपणात्मक विश्लेषण का आभाव था परन्तु पाणिनीय वैदिक प्रक्रिया के प्रकाश में आने से इन सब का विधिवद विश्लेषण किया गया है।
आचार्य पाणिनि ने वैदिक एवं लौकिक वाङ्मय को और सरल बनाने के लिए अपने व्याकरण में अधिकार सूत्र, वार्तिक आदि का निर्माण करके जन सामान्य को व्याकरण समझने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। इस प्रकार पदों की सिद्धि, सूत्रों, वार्तिकों द्वारा व्याकरण को सरल और वैज्ञानिक बना दिया।
'अधिकार सूत्र' के विषय में इन्होंने कहा कि– 'स्वदेश शून्यत्वे सति उत्तर देश संस्कारत्वं अधिकारत्वम्'– सूत्र के पद विशेष का जहाँ प्रयोग होता है वहाँ वह प्रयोजनशून्य रहता है और बाद वाले सूत्रों में पद विशेष का अधिकार जाता है।

अपरोऽधिकारो यथा रज्जवायसा वा बद्धं काष्ठं अनुकृष्यते चकारेण।

'पारिभाषिक संज्ञाओं' के प्रयोग के विषय में भी इन्होने कहा है–अन्य शास्त्रों में जिस प्रकार एक निश्चित परिधि के भीतर शब्दों का प्रयोग किया जाता है उसी प्रकार वैदिक प्रक्रिया के अन्तर्गत भी पाणिनि ने कतिपय पारिभाषिक संज्ञाओं का प्रयोग किया है। जो घि संज्ञा, भ संज्ञा, पद संज्ञा आदि हैं। महर्षि पाणिनि ने व्याकरण में 'अनुवृत्ति' का प्रयोग करके वैदिक व्याकरण सम्बन्धी विश्लेषणपूर्वक पद साधुत्व किया जबकि पूर्ववर्ती अन्य आचार्यों ने यत्र तत्र सहारा लिया है। 'निपातन' के विषय में कहा गया है कि जब किसी प्रयोग की निष्पति सामान्य नियमों से नहीं होती है, अथ च वेदादि में तब उसे उसी रूप में प्रत्यय विभक्ति आदि का प्रयोग कर सिद्ध कर दिया जाय तो उसे निपातन कहते हैं परन्तु पाणिनि ने इसे परिभाषित किया और इसकी दो विधियाँ बतायी – 1– निष्पन्न पद निर्देश 2– साधनिका पूर्वक पद निर्देश 'बहुलं छंदसि' इस सूत्र का प्रयोग पाणिनि ने वैदिक प्रक्रमों में ग्यारह बार प्रयोग किया है। अन्य वैदिक विधियों में भी कई बार 'बहुल' शब्द का प्रयोग किया गया है। जिसका अर्थ होता है–नियम विशेष का लक्ष्य विशेष में प्रवृत्त होना।

महर्षि पाणिनि ने अपने समय के समस्त संस्कृत वाङ्मय को पाँच भागों में बाँटा है जो निम्न हैं–

1. दृष्ट, 2 प्रोक्त, 3. उपज्ञात 4. कृत व 5 व्याख्यान।

दृष्टादि शब्दों का अर्थ– पाणिनि ने प्राचीन वैदिक वाङ्मय को विभाजित करने के लिए दृष्ट प्रोक्त आदि शब्दों का व्यवहार किया है।

1. **दृष्टः** दृष्ट शब्द का अर्थ है– देखा गया। इस विभाग में पाणिनि ने उस वाङ्मय का निर्देश किया है जो न किसी के द्वारा कृत है और न प्रोक्त है अर्थात पूर्वतः विद्यमान वाङ्मय के विषय में ही किन्हीं विशेष विषयों का जो विशिष्ट दर्शन है, दृष्ट के अन्तर्गत समझा जाता है। पणिनि का सूत्र है–दृष्टं साम यह साम शब्द सामवेद पठित ऋचाओं के लिए प्रयुक्त नहीं किया गया है अपितु जैमिनि के श्गीतुषु सामाख्या लक्षण के अनुसार ऋचाओं के ज्ञान का वाचक है।
2. **प्रोक्तः** प्रोका शब्द का अर्थ है– कहा हुआ, पढ़ाया हुआ इस विभाग में वह सारा वाङ्मय आता है जो पूर्वतः विद्यमान स्व–स्वः विषयक ग्रन्थों को ही देश काल की परिस्थिति के अनुसार ढालकर विशेष रूप से शिष्यों को पढ़ाया जाता है। इसमें संस्कर्ता पुराने शास्त्र को पुनः नया बना देता है। इस प्रकार का व्यवहार आयुर्वेदीय चरक संहिता के सिद्धि स्थान अध्याय–12 में मिलता है। पाणिनीय शास्त्र भी प्रोक्त है।
3. **उपज्ञातः** उपज्ञात शब्द का अर्थ है–ग्रन्थ प्रवक्ता द्वारा स्वमनीषा से विज्ञात। इसके अन्तर्गत प्रोक्त ग्रन्थों के वे विशिष्ट अंश संगृहीत होते हैं जिन पूर्व ग्रन्थों का देशकालानुसार प्रवचन करते हुए प्रवक्ता ने अपनी अपूर्व मेधा के आधार पर सर्वथा नये रूप में सन्निविष्ट किया हो। यथा– पाणिनीयम कालकं थाकरणं कात्सकृत्सनं गुरू लाघवम्। पाणिनि के विषय में एब का मत एक जैसा है कि पाणिनि ने सबसे पूर्व स्वमति से काल परिभाषा रहित व्याकरण की रचना किया है।
4. **कृतः** कृत ग्रन्थों का उल्लेख पाणिनि ने दो स्थानों पर किया है। 1. अधिकृत्य कृते ग्रन्थे (अष्टध्यायी में) 2. कृते ग्रन्थे (अष्टा) 'कृत' का सामान्य अर्थ है कि बनाया हुआ, इस विभाग में वह चाङ्मय आता है जिनकी पूरी वर्णानुपूर्वी ग्रन्थकार की अपनी होती है। महर्षि पाणिनि ने शिशुक्रन्द – (बच्चों का रोना) यमसभा इन्द्रजननं (इन्द्र की उत्पत्ति) आदि शब्द से विभिन्न विषयों के ग्रन्थों का निर्देश किया है। इसके अतिरिक्त ऋतुग्रन्थ में पाणिनि ने 'वसन्तादिभ्यष्ठक' में वसन्त आदि ऋतुओं पर लिखे ग्रन्थों के पठन पाठन का उल्लेख किया है।
5. **व्याख्यानः** इसका भाव स्पष्ट है समस्त टीका टिप्पणी व्याख्या ग्रन्थ इसके अन्तर्गत हैं। पाणिनि की – अष्टाध्यायी में 4/3/66 में तस्य व्याख्यान का प्रकरण है। इस प्रकरण में अनेक व्याख्यान ग्रन्थों का निर्देश है।

अतः यह सिद्ध होता है कि महर्षि पाणिनि ने सरल व्याकरण की रचना करके वैदिक और लौकिक वाङ्मय को अत्यन्त सरल बना दिया है।

जिसका अध्ययन कर संसार के सुधीजन संहिता जैसे क्लिष्ट ग्रन्थों का आस्वादन कर रहे हैं, तथा अपना लोक परलोक सुधार रहे हैं। महर्षि पाणिनि के व्याकरण शास्त्र की गौरव गाथा आज भी पण्डित समाज में विख्यात है। किसी विद्वान ने कहा भी है कि– समुद्रवत व्याकरणं महेष्वरे तदर्थ कुम्मोद्धरणं बृहस्पतौ। तदभाग शब्द शतं पुरन्दरे, कुशाग्र बिन्दूत्पतितं हि पाणिनि।।

इसीलिए वर्तमान में व्याकरण वेदांग का प्रतिनिधि पाणनीय व्याकरण है। अपनी विशिष्टता के कारण सर्वत्र समादृत है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. नन्दिकेश्वरकाशिका – 01/01 (250ई0पू0)
2. महाभाष्य 01/01/49
3. अष्टाध्यायी प्रकाशिका प्रो देवप्रकाश पातंजल 6/1/34 (पाणिनीय, अनुसंधान मन्दिर, देहली)
4. वैदिक साहित्य और संस्कृति – श्री बलदेव उपाध्याय (शारदामंदिर, गणेशदीक्षित काशी)
5. सिद्धान्त कौमुदी – डा० आद्या प्रसाद मिश्र (अक्षयवट प्रकाशन इलाहाबाद)
6. काशिकावृत्तिः – जयादित्य वामन (तारा पब्लिकेशन कमच्छा वाराणसी भाग–1–6)
7. पाणिनिकालीन भारत वर्ष वासुदेव शरण अग्रवाल (महताबराय देवनागरी मुद्रण, काशी)
8. पाणिनि व्याकरण का अनुशीलन– डा० रमाशंकर भट्टाचार्य (नेपाली खपड़ा. वाराणसी)
9. वैदिक व्याकरण–डा० राम गोपाल (नेशनल पब्लिशिंग हाउस अंसारीरोड, दिल्ली)
10. वैदिक साहित्य का इतिहास–प्रभा कुमारी अग्रवाल (प्रकाशन केन्द्र लखनऊ)